विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नेट-ब्यूरो

Code No. : 90

विषयः अन्तर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय अध्ययन

पाठ्यक्रम

इकाई-1 : अन्तर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय अध्ययन : अवधारणा, सिद्धान्त और उपागम

- अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों और क्षेत्रीय अध्ययन की प्रमुख अवधारणाएं, विषय-क्षेत्र और प्रकृति
- सिद्धान्त : अन्तर्राष्ट्रीय संबंध और क्षेत्रीय अध्ययन के उदारवादी, यथार्थवादी, मार्क्सवादी और समीक्षात्मक सिद्धान्त।
- उपागम : पाश्चत्य एवं गैर – पाश्चात्य
- शक्ति राजनीति : शक्ति संतुलन, भू-राजनीति, एकल ध्रुवीयता, द्विध्रुवीयता, बहुध्रुवीयता और बहु-केंद्रीयवाद
- अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध और क्षेत्रीय अधय्यन के अन्तर्गत राज्य और गैर-राज्य अभिकर्ता

इकाई-2: अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और क्षेत्रीय अध्ययनो का क्रमिक विकास

- आधुनिक राष्ट्र–राज्यों और राष्ट्रवाद का अभ्युदय
- विश्वयुद्ध I से पहले अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली
- दोनो विश्व युद्धों के मध्य की अवधि में अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि (शीतयुद्ध काल) में अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली
- गैर-उपनिवेशवाद, वैश्विक दक्षिण और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति
- शीत युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय संबंध
- वैश्वीकरण का प्रभाव

इकाई-3: समसमायिक विश्व व्यवस्था

- विश्वव्यवस्था के बदलते प्रतियान : एकल ध्रुवीयता, द्विध्रवीयता, बहुध्रवीयता, बहुकेन्द्रीयवाद
- बड़ी शक्तियों की भूमिका : यू.एस., रूस, चीन, जापान, भारत और ई.यू।
- वैश्विकता, वैश्विकवाद और वैश्वीकरण
- लोकतांत्रिककरण और विश्व व्यवस्था
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी और विश्व व्यवस्था

इकाई-4: संघर्ष, सुरक्षा और शान्ति : राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय

- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणाएं, घटक और सांदर्श
- स्त्रातजिक चिंतन का क्रमिक विकास : कौटिल्य, सुन ज़ू, मैक्यावेली, एन्टोनयो जोमिनी, कार्ल वॉन क्लाजविज, एच. मैकाइंडर, ए.टी. माहन, विलिएम मिचेल, एलेग्जेंडर डी सेवेरास्की, एच. किसिंजर
- स्त्रातजिक शास्त्रीय सिद्धान्तों का क्रमिक विकास : विशाल प्रतिकार, लचीला प्रत्युत्तर, परस्पर सुनिश्चित विध्वंस (एम ए डी), स्त्रातत्रिक रक्षात्मक पहल (एस डी आई), एन एम डी
- भारत की सुरक्षा नीतियों का क्रमिक विकास और नाभिकीय तथा सामुद्रिक सिद्धान्त
- युद्ध कर्म की नयी अवस्थाएं: पारम्परिक, निम्न तीव्रता के संघर्ष, सूचना और संचार युद्ध कर्म, नाभिकीय, जैविक और रासायनिक युद्धकर्म, सैन्य सम्बन्धी मामलों में क्रान्ति।
- गैर-पारम्परिक सुरक्षा-खतरे : खाद्य और स्वास्थ्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, पर्यावरणीय सुरक्षा, महिला सुरक्षा, मानव सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और आंतकवाद
- संघर्ष-समाधान और शान्ति, शस्त्र नियंत्रण एवं निरस्त्रीकरण

इकाई-5: अन्तर्राष्ट्रीय संगठन और वैश्विक सुशासन

- अन्तर्राष्ट्रीय शांन्ति और सुरक्षा, विकासात्मक सहयोग, लोकतंत्रीकरण में अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका
- संयुक्त राष्ट्र : भूमिका, प्रासंगिकता और सुधार
- वैश्विक सुशासन : सार्वजनीन विश्व के मुद्दे और चुनौतियाँ
- क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय संगठन
- वैश्विकरण का प्रभाव
- वैश्विक सुशासन के साधन के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय विधि

इकाई-6: भारत की विदेश नीति

- भारत की विदेश नीति के उद्देश्यों और सिद्धान्तों का क्रमिक विकास

- पड़ोसी देशों और विस्तारित पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंध
- भारत और बड़ी शक्तियों : यू.एस., रूस, चीन, जापान और ई.यू
- भारत की 'पूर्व की ओर देखो' और 'पूर्व की नीतियों पर चलो' नीति
- अन्तर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय संगठनों के साथ भारत के संबंध
- भारत की विदेश नीति में इसकी नम्य शक्ति की भूमिका

इकाई-7: दक्षिण एशिया एवं हिन्द-प्रशांत क्षेत्र

- भू-राजनीतिक और भू-स्त्राताजिक अवस्थिति
- उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता के आन्दोलन
- राष्ट्र–निर्माण, राज्य निर्माण, और लोकतंत्रीकरण की चुनौतियां
- स्वतन्त्रता के बाद के घटनाक्रम : राजनीतिक शासन-व्यवस्था
- राष्ट्र सुरक्षा और मानव सुरक्षा को बाहरी और आन्तरिक खतरे
- भू-भागीय और सामुद्रिक मुद्दे, क्षेत्र से बाहरी शक्तियों की भूमिका
- क्षेत्रीय व्यापार, विकासात्मक सहयोग और स्त्रातजिक भागीदारी : आई ओ आर ए, सार्क, ए आर एफ, ए पी ई सी, बिम्सेटक, मीकांग-गंगा सहयोग इत्यादि
- उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (एल पी जी) का प्रभाव

इकाई-8: मध्य एशिया, पश्चिमी एशिया और अफ्रीका

- भू-राजनीतिक और भू-स्त्रातजिक अवस्थिति
- उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद और स्वतन्त्रता के आन्दोलन
- राष्ट्र–निर्माण, राज्य-निर्माण और लोकतंत्रीकरण को चुनौतियां
- स्वतन्त्रता के बाद के घटनाक्रम :राजनीतिक शासन-व्यवस्था
- राष्ट्र सुरक्षा और मानव सुरक्षा को आन्तरिक और बाहरी खतरे
- क्षेत्रीय संघर्ष और मुद्दे तथा क्षेत्र से बाह्य शक्तियों की भूमिका
- क्षेत्रीय व्यापार, विकासात्मक सहयोग और भागीदारी
- वैश्वीकरण का प्रभाव

इकाई-9: यूरोप और पूर्व-सोवियत संघ / रूस

- भू-राजनीति और भू-स्त्रातजिक अवस्थिति
- राष्ट्रवाद, औद्योगिक क्रान्ति और राज्य निर्माण
- दो विश्व युद्धों के बीच का यूरोप

- यूरोप में संधियाँ और समझौते : नाटो, वार्सा संधि संगठन, हेलासिंकी समझौता, ई यू आदि
- राज्य सुरक्षा और मानव सुरक्षा को आन्तरिक और बाह्य खतरे, प्रव्रजन, शरणार्थी और नृजातीय समस्या
- व्यापार, विकास सहयोग और स्त्रातजिक भागीदारी
- यूरोप में यू.एस. की भूमिका
- वैश्वीकरण का प्रभाव

इकाई-10: अमेरिकी महाद्वीप

- भू-राजनीतिक और भू-स्त्रातजिक अवस्थिति
- उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद और स्वतन्त्रता के आन्दोलन
- राष्ट्र–निर्माण, राज्य-निर्माण और लोकतंत्रीकरण की चुनौतियां
- राष्ट्र सुरक्षा और मानव सुरक्षा को आन्तरिक और बाह्य खतरे
- क्षेत्रीय संघर्ष और मुद्दे : यू.एस. और क्षेत्र से बाहर की शक्तियों की भूमिका
- क्षेत्रीय व्यापार, विकासात्मक सहयोग और स्त्रातजिक भागीदारी
- वैश्वीकरण और इसका प्रभाव